JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"समावेशी शिक्षा की चुनौतियां एवम् समाधान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन "

डॉ.सुधीर कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी0एड0)
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई

शोध सारांश

भारत विविधताओं से आच्छादित से देश है,यदि भारतीय संस्कृति का अवलोकन किया जाय तो सामाजिक ,आर्थिक ,मनोवैज्ञानिक,लैंगिक ,भाषायी,शारीरिक इत्यादि विविधता स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती हैं।भारत में इन विविधताओं का प्रभाव के कारण शैक्षिक अवसरों को समान रूप से सभी छात्रो को उपलब्ध कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। प्रस्तुत शोध पत्र समावेशी शिक्षा के सम्मुख आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर आधारित हैं, समावेशी कक्षा, समावेशी शिक्षक ,समावेशी पाठ्यक्रम, का निर्माण कैसे हो,ताकि एक समता मूलक समाज की स्थापना की जा सके और शिक्षा तक सबकी पहुँच सुनिश्चित जा की सके।

प्रयुक्त शब्द- समावेशी , शिक्षा , चुनौती, समाधान,समानता,समावेशन

प्रस्तावना – समता मूलक और समावेशी समाज की स्थापना के लिए समावेशी शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता हैं।,किसी भी देश के विकास के लिए शिक्षा की पहुँच समाज के सभी वर्गों तक होना नितांत आवश्यक हैं ,ताकि समाज की सभी प्रकार विविधताओं को समाप्त किया जा सकें ।भारत में प्रारभ समावेशी शिक्षा की शुरुवात मुख्य रूप से उस समय से मानी जाती हैं,जब भारत सरकार द्वारा विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा व्यवस्था (IEDC) की शुरुवात 1974 में की गयी , जिसका मुख्य उद्देश्य विकलांग छात्रो और सामान्य छात्रो को एक साथ एकीकृत कराया गया।

1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शारीरिक एवं मानसिक विकलांग छात्रो को सामान्य छात्रों के साथ सामान्य कक्षा में रखने की बात की गयी हैं।

आगे चलकर इसका दायरा बढ़ता गया समावेशन केवल विकलांग छात्रो तक सीमित न होकर सभी प्रकार की विविधता और विषमता जैसे लैंगिक विभेद ,क्षेत्रीय विभेद ,धार्मिक विभेद ,भाषायी विभेद ,सामाजिक विभेद ,सांस्कृतिक विभेद या किसी भी प्रकार के विभेद को समावेशी शिक्षा में सम्मिलित किया जाता है अर्थात् किसी भी प्रकार की असमानता हो उसे समावेशी शिक्षा में सम्मिलित किया जा सकता हैं।

विकलांग अधिकार अधिनियम 2016 में समावेशी शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा गया हैं" शिक्षा की एक विशेष प्रकार की प्रणाली हैं जिसमें विकलांगता वाले छात्र एक साथ सिखतेहैं और शिक्षण और सिखने की प्रणाली को विभिन्न प्रकार के विकलांग छात्रो को सिखने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयुक्त

रूप से अनुकूलित किया जाता हैं" अर्थात समावेशी शिक्षा सभी छात्रो की विशिष्टताओं और क्षमताओं पर ध्यान न देकर उनको विकसित होने का समान अवसर प्रदान करती हैं।

विवेचना-- समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य एक समतामूलक समाज की स्थापना करना है , जो सभी प्रकार के सामाजिक वंचन को प्रतिबन्धित करती हैं।समावेशी शिक्षा का एक निश्चित मापदंड होता हैं,जिसके आधार पर समावेशी शिक्षा का आकलन एवम् मूल्यांकन होता हैं ।समावेशी शिक्षा के कुछ प्रमुख सिद्धांत होते हैं जिसका विवरण नितान्त आवश्यक हैं,जिसे|बिन्दुवार प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

1.**वैयक्तिक भिन्नता**- समावेशी शिक्षा, वैयक्तिक भिन्नता का पूर्ण समर्थन करती हैं तथा इस अवधारणा पर विश्वास करती हैं कक्षा में अध्यनरत हर बालक की अपनी विशिष्टता होती हैं।

शिक्षक को इसी विशिष्टता एवम् विविधता को पहचान कर सभी छात्रो को समान रूप से विकिसित होने का अवसर प्रदान करना चाहिए।क्षागत विविधता की पहचान करना शिक्षक के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य हैं।

माता –पिता एवम् अभिभावकों का सहयोग - समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त तभी किया जा सकता हैं , जब तक माता –पिता और अभिवावाको का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता हैं ,तथा तभी उद्देश्यों को फलीभूत किया जा सकता हैं समावेशन का एक महत्वपूर्ण कारक हैं।

शिक्षा का पूर्णतया निरपेक्ष होना - समावेशी शिक्षा सभी प्रकार विभेद का विरोध करती हैं। शिक्षा के सभी ध्रुवों शिक्षक,छात्र ,एवम् पाठ्यक्रम का समावेशी होना नितांत आवश्यक हैं ।जब शिक्षा के सभी रूपों ,प्रकारों,एवं उद्देश्यों में समावेशन होना समावेशी समाज का अनिवार्य अंग हैं।

समानता- समावेशी शिक्षा समानता के मूल सिद्धांतों का अनुसरण करती हैं।समष्टि में विद्यमान हर बालक समान हैं,वह अपने आप में विशिष्ट होता हैं ,समानता का सिद्धांत समावेशी शिक्षा की आत्मा की तरह कार्य करती हैं।

लचीलापन – समावेशन की अवधारणा को तभी पूरा किया जा सकता जब कक्षागत विविधताओं को आवश्यकता के आधार उसमें बदलाव किया जा सकें,क्योंकि समावेशी कक्षा में विशिष्ट आवश्यकता और सामान्य विद्यार्थियो की सीखने की क्षमता अलग–अलग होती हैं।

प्रेरणा-प्रेरणा किसी भी विद्यार्थी के लिए संजीवनी के समान होती हैं बिना उसके तो समावेशी शिक्षा संभव हो पाना मुश्किल हैं ,प्रेरणा विशेष आवश्यकता वालें विद्यार्थियो के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं।

मूल्यांकन का सिद्धांत- विशेष आवश्यकता वालें विद्यार्थियो और सामान्य विद्यार्थियो की सीखने की क्षमता अलग –अलग होती हैं,इसीलिए मूल्यांकन में लचीलेपन रखना अनिवार्य हो जाता हैं ताकि वह कुंठा से ग्रसित न हो जाय मूल्यांकन ।

विशिष्ट शैक्षिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन एवम् क्रियान्वयन- समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न शैक्षिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करना हैं,ताकि सामाजिक तथा शैक्षिक अपवंचन कम हो समाज में शिक्षकों, छात्रों को जागरूक करना ताकि एक समावेशी वातावरण का निर्माण हो सके ।

समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में चुनौतियों का विवरण-- समावेशी शिक्षा केवल विकलांग विद्यार्थियों तक सीमित नहीँ हैं अपितु इसमें सभी प्रकार के वंचन को शामिल किया जाता है ,जिसका विवरण निम्नवत हैं।

क्रम संख्या	समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँ
1	❖ पर्याप्त संसाधनों का आभाव
2	❖ सीमित अभिवाकीय सहायता
3	❖ संवैधानिक अधिकारों का उचित क्रियान्वयन हो
4	❖ अपर्याप्त सामुदायिक समर्थन
5	❖ निरपेक्ष दृष्टिकोण का अभाव
6	❖ शिक्षकों का उदासीन होना
7	❖ शिक्षकों में समर्पण त्याग अतिरिक्त समय न देने की मनोदशा
8	❖ शिक्षकों में तुलनात्मक आवृत्ति का बहुत ज्यादा होना
9	❖ विद्यालय में प्रशासनिक समन्वय का अभाव
10	❖ विद्यालय छात्रवृत्ति शिक्षक व समुदाय के बीच उचित समन्वय ना हो पाना
11	❖ शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के अनुरूप प्रशिक्षण ना होना
12	❖ शिक्षकों में तकनीकी कुशलता का अभाव
13	❖ शिक्षकों में सामाजिक संवेदनशीलता का काम होना
14	❖ सामान्य शिक्षक और विशिष्ट शिक्षक में उचित तालमेल न होना

उपरोक्त तालिका के अतिरिक्त प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज में अनेकों चुनौतियाँ विद्यमान हैं ,जो किसी न किसी रूप में समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों को हतोत्साहित करता हैं।

समाधान- समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण रूप से तभी प्राप्त किया जा सकता हैं, जब शिक्षक ,अभिभावक ,समाज और तकनीक का पूर्ण सम्न्वय हो ।कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर यहाँ पर दृष्टिपात करना आवश्यक हैं।

सरकार द्वारा पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता -- समावेशी शिक्षा के बहुआयामी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा मानवीय एवम् भौतिक संसाधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना हैं क्योकि समावेशी शिक्षा सामान्य और विशिष्ट शिक्षा का समन्वय हैं। सरकार द्वारा समतामूलक एवम् समावेशी समाज के निर्माण के लिए निरंतर प्रयास तो किया गया ,लेकिन उसका सही क्रियान्वयन न हो पाना ,समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को हतोत्साहित कर रहा हैं।NEP 2020 में सामाजिक –आर्थिक रूप से वंचित समूह (SEDG)विशेष शैक्षिक क्षेत्र (SEZ) का निर्माण करके वहां विशेष सुविधा उपलब्ध कराईं जा रही हैं,सामान्य और विशिष्ट शिक्षकों का चयन और नियुक्ति करना ,तकनीकी संसाधन ,तकनीकी स्टॉफ ,नर्स ,डॉक्टर,की भी नियुक्ति हो तो समावेशी शिक्षा का क्रियान्वयन उचित ढंग से हो सकता हैं ।

शिक्षकों के प्रशिक्षण को आधुनिक बनाना - समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षित होने की आवशयकता हो ,ताकि वह अपनी कक्षा की विविधता को पहचान सके और अपनी कक्षा

में समावेशी वातावरण का निर्माण कर सके ,क्योंकि समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्र (WSN), एवं सामान्य छात्र दोनों सम्मलित होते हैं।

समावेशी कक्षा जिसमें विकलांग विद्यार्थी ,भाषायी आधार पर पिछड़े विद्यार्थी शामिल होते हैं ।इस विविधता को पहचानने के लिए उसमें एक संवेदनशील मस्तिष्क और ह्रदय का निर्माण हो, NEP 2020 में बी0एड0 कार्यक्रमों में शिक्षणशास्त्र में आधुनिक तकनीकी में प्रशिक्षित किया जाय, सेवारत शिक्षक शिक्षा का कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने का कौशल,लिंग ,और अन्य वंचित वर्गों के प्रति सवेदनशील बनाना हैं।

अभिभावकों की सहभागिता को बढ़ाना - समावेशी शिक्षा में विशिष्ट आवश्यकता वाले एवम् सामान्य छात्रो को एक साथ बढ़ाना होता हैं। समावेशी शिक्षा अपनें उद्देश्यों को तभी प्राप्त कर सकता हैं, जब शैक्षिक कार्यक्रमों में उनको शामिल किया जाय , अभिभावकों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये।

शिक्षकों में समर्पण, त्याग ,अतिरिक्त समय देने की भावना का विकास करना - समावेशी शिक्षा के मुख्य मसाल वाहक शिक्षक ही होता है शिक्षक एक सार्वजनिक व्यक्ति होता हैं,न की व्यक्तिगत । शिक्षक में उच्च कोटि का त्याग ,समर्पण अपने विद्यार्थियों के प्रति होना चाहिए ,शिक्षक को 24×7 हर समय अपने छात्रों के लिए उपलब्ध रहना चाहिए एवं उन छात्रों के लिए जो कक्षा में सामान्य विद्यार्थियों से अलग किसी न किसी प्रकार की विशिष्ट कोटि के हैं अतिरिक्त समय देने की प्रवृत्ति का होना महत्वपूर्ण है। जब शिक्षक में इस तरह की प्रवृत्ति होगी तो निश्चित रूप से हम सामाजिक समावेशन को प्राप्त करेंगे जो समावेशी शिक्षा का मेरुदंड साबित होगा ।

निष्पक्ष दृष्टिकोण का विकास करना-वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्रायः यह देखने को मिलता है कि , शिक्षक किसी न किसी कारण से विषयनिष्ठ होता जा रहा है,समावेशन की आत्मा ही निष्पक्षता है, कक्षा में शिक्षक समावेशी वातावरण का निर्माण तभी कर सकता है जब उसका दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होगा शिक्षक में एक समन्वयकारी दृष्टिकोण का होना नितांत आवश्यक है।

शिक्षकों में तुलनात्मक अभिवृत्ति को हतोत्साहित करना- वर्तमान समय में प्रायः देखा जाता है कि शिक्षकों के अंदर कार्य को लेकर एक तुलनात्मक आवृत्ति बनती जा रही है। उनके मानस में ऐसे नकारात्मक विचार पैदा होते हैं, कि वह अपने कार्यों का निर्धारण दूसरे शिक्षक के कार्यों के आधार पर करते हैं। यह स्थिति समावेशी अवधारणा को बहुत गहरी क्षति पहुंचती है ,जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समावेशी शिक्षा में बहुत ज्यादा बल दिया गया है प्रशासकीय एवं व्यक्तिगत मूल्यों के आधार पर इसे हतोत्साहित सहित किया जाना चाहिए ।

विद्यालयों में प्रशासकीय समन्वय मजबूत बनाना- यह समावेशी शिक्षा की मूल अवधारणा है और उसके उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए विद्यालय की सभी घटकों में एक समन्वय होना चाहिए। जॉन डीवी ने शिक्षा को त्रिध्रुवी प्रक्रिया बताया है जिसमें शिक्षक,छात्र,पाठ्यक्रम में समन्वय होना नितांत आवश्यक है,क्योंकि समावेशी शिक्षा मूल रूप से इन्हीं तीन कारकों की अंतः क्रिया होती है। प्रशासकीय रूप से इसमें मुख्य रूप से पांच आयाम महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जिसमें छात्र ,शिक्षक ,पाठ्यक्रम,प्रधानाचार्य ,समुदाय के मध्य सकारात्मक अंतर क्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतः क्रिया निम्न प्रक्रिया से समझा जा सकता हैं।

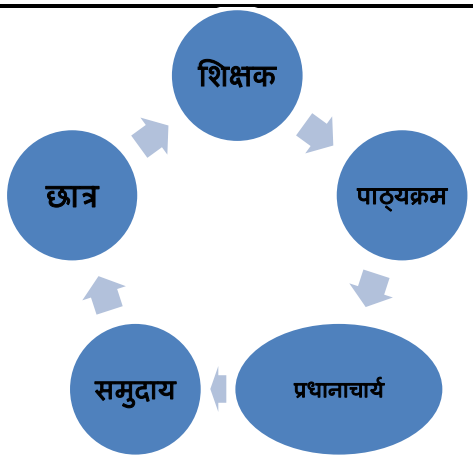

निष्कर्ष- समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य सामान्य एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों का एक साथ विकास करना है। समावेशन की मूल अवधारणा में सभी प्रकार के समावेशन को जैसे शैक्षिक समावेशन, दिब्यंग्जन ,लैंगिक सांस्कृतिक, भाषायी,सामाजिक सभी प्रकार के वंचन को सम्मिलित किया जाता है। समावेशी शिक्षा कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां एवं समाधान पर इस शोध पत्र में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं। समावेशी शिक्षा के कुछ कारक है जिनमें आपसी अंतः क्रिया महत्वपूर्ण है जैसे शिक्षक ,छात्र, पाठ्यक्रम ,समुदाय के मध्य एक समवन्वित दृष्टिकोण का होना महत्वपूर्ण है।इसके अलावा अभिभावकों का पूर्ण सहयोग एवं शिक्षकों को नवाचारी तकनीक का प्रयोग करना समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है। उपरोक्त वर्णित समाधान को हम यदि क्रियान्वित करने में सफल हो सके तो निश्चित रूप से हम समावेशी समाज का निर्माण कर सकतें हैं।

संदर्भ :

- शर्मा ,शशि प्रभा, 2024 "समावेशी शिक्षा "कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली
- मदन मोहन,2005 समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएं प्रशासन संस्थान नई दिल्ली
- कछावा प्रीति 2020 नई शिक्षा नीति 2020 एवं समावेशी शिक्षा
- गुप्ता पीसी, गुप्ता अलका 2004 उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज
- जोशी प्रमोद मार्च 2017 कुरुक्षेत्र "समावेशी शिक्षा की दिशा में प्रयास"
- यादव कल्पना 2017 भारत में समावेशी शिक्षा की रणनीतियां
- सरोज चौधरी 2021 उच्च माध्यमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा की नीति प्रबंधन एवं समस्याएं
- शर्मा डॉ विमलेश "समावेशित विशेष शिक्षा "शारदा पुस्तक सदन नई दिल्ली
- पाठक आशीष सिंह धर्मवीर 2024' विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के संवर्धन में शिक्षकों की भूमिका "JETIR
- https://www.eduaction.gov.in